इकाई 6 विस्तार और सुदृढ़ीकरण : 1556-1707

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य
6.1 प्रस्तावना
6.2 सत्ता की राजनीति और बैरम खां का संरक्षण : 1556-1560
6.3 अकबर के अधीन क्षेत्रीय प्रसार
6.3.1 उत्तर तथा मध्य भारत
6.3.2 पश्चिम भारत
6.3.3 पूर्वी भारत
6.3.4 1581 ई० के विद्रोह
6.3.5 उत्तर-पश्चिम में विजय
6.3.6 दक्खन तथा दक्षिण
6.4 प्रशासनिक पुनर्गठन
6.5 अकबर के उत्तराधिकारियों के अधीन क्षेत्रीय प्रसार
6.6 स्वायत्त सरदारों के प्रति नीतियां
6.7 सारांश
6.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन करने के बाद आप जानकारी प्राप्त कर सकेंगे:

- कि बैरम खां के संरक्षण का किस प्रकार से अंत हुआ और अकबर ने कैसे राज्य के मामलों को अपने नियंत्रण में कर लिया,
- अकबर और उसके उत्तराधिकारियों के काल में मुगल साम्राज्य के क्षेत्रीय प्रसार की,
- साम्राज्य के प्रसार के समय मुगलों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ा,
- अकबर के अधीन प्रांतों के निर्माण एवं,
- मुगल सम्राटों एवं स्वायत्त राज्यों के संबंधों की तथा इसने कैसे साम्राज्य के प्रसार एवं सुदृढ़ीकरण में मदद की।

6.1 प्रस्तावना

हुमायूं ने मुगल साम्राज्य का उद्धार कर उसे सन् 1555 ई० में पुन: स्थापित किया। अकबर की नीतियों ने साम्राज्य को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अकबर के शासन काल में ही मुगल साम्राज्य एक राजनीतिक वास्तविकता बन गया और उसने भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। अकबर के उत्तराधिकारियों ने कुछ परिवर्तनों के साथ उस नीतियों को अपनाया या यह भी कहा जा सकता है कि उन्होंने अपने समय के राजनीतिक वातावरण के अनुरूप नीतियां अपनाई। इस इकाई में हम प्रशासनिक व्यवस्था एवं शासक वर्ग के उद्भव की विस्तृत चर्चा नहीं करेंगे। इसकी विस्तृत विवेचना खंड-4 में की जाएगी। इस इकाई में मुख्य रूप से क्षेत्रीय प्रसार एवं इससे जुड़ी समस्याओं तक ही हम स्वयं को सीमित रखेंगे। एक विशाल साम्राज्य के रूप में विकसित होने के दौरान मुगल शासकों को ऐसी राजनीतिक शक्तियों के साथ जूझना पड़ा जिनका कई क्षेत्रों में आधिपत्य कायम था। इनमें राजपूत, विन्ध्याचल के दक्षिण में स्थित

बीजापुर, गोलकुण्डा, अहमदनगर और मराठा शासक महत्वपूर्ण थे खंड-3 में हम इस पक्ष की विस्तृत विवेचना करेंगे।

हम अपनी विवेचना का प्रारंभ अकबर से करते हैं कि कैसे उसने अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त की और किस प्रकार से अपनी सर्वोच्चता को मुगल दरबार में स्थापित किया।

6.2 सत्ता की राजनीति और बैरम खां का संरक्षण : 1556-1560

हुमायूं की मृत्यु के समय अकबर की आयु मात्र 13 वर्ष थी। हुमायूं के विश्वासपात्र एवं अकबर के शिक्षक बैरम खां ने 1556-1560 तक उसके संरक्षक के रूप में कार्य किया। बैरम खां के संरक्षक काल को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम अकबर के सिहांसनारोहण से पानीपत के द्वितीय युद्ध से पूर्व अर्थात जनवरी 1556 से अक्टूबर 1556 तक था। यह वह समय था जबकि अभिजात वर्ग ने अपने हितों की रक्षा करने के लिए बैरम खाँ के नेतृत्व को स्वीकार किया। दूसरा चरण पानीपत की लड़ाई के बाद भारत में शाही स्त्रियों (हामिदा बानू बेगम आदि) के आगमन तक का था। इस समय के दौरान बैरम खां ने राज्य के मामलों पर अपना पूर्ण नियंत्रण स्थपित किया। उसने अपने व्यक्तित्व समर्थकों का एक गुट बनाने का प्रयास किया। तीसरे चरण में जो कि 1559 के मध्य तक था, बैरम खां की शक्ति एवं प्रभाव का ह्रास हुआ। अंतिम चरण में बैरम खां ने पुनः अपने नियंत्रण को स्थापित करने का प्रयास किया। इसी समय में गुटीय तनाव भी बढ़ा जिसके कारण बैरम खां को सत्ता से निरस्त कर दिया गया। राजनीतिक तौर पर प्रथम चरण असुरक्षा का था। इस समय में न केवल हुमायूं की मृत्यु हुई अपितु साम्राज्य को हेमू की अफगान सेनाओं को सामना करना पड़ा। इस समय अकबर काफी छोटा था जिसके कारण इन घटनाओं से निराशा का वातावरण छा गया। इस स्थिति से सुरक्षित बचने का उपाय सम्राट के लिए एक संरक्षक की नियुक्ति करना था। लेकिन भय यह था कि यदि किसी अभिजात को एक संरक्षक के रूप में नियुक्त किया जाए और अगर वह एक वास्तविक सार्वभौम के रूप में कार्य करेगा तब अभिजात वर्ग के पारस्परिक संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा जिससे प्रशासन को खतरा पैदा हो जाएगा। इन सभी खतरों के बाबजूद बैरम खां को **वकील** नियुक्त किया गया। आश्चर्य की बात यह है कि किसी भी अभिजात सदस्य ने बैरम खां की नियुक्ति का विरोध न किया। अभिजात वर्ग का कोई भी सदस्य लंबी सेवाओं, रक्त संबंधी रिश्ते या अकबर के साथ पूर्ववर्ती निकटता के आधार पर **वकालत** के लिए दावा प्रस्तुत कर सकता था। इन सभी को बैरम खां की कड़ी आलोचना के लिए आधार भी बनाया जा सकता था।

कुलीनों द्वारा बैरम खां को संरक्षक स्वीकार करने से ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि वे उसके साथ सत्ता एवं प्रभाव में भागीदारी चाहते थे। दूसरी ओर बैरम खां सत्ता का स्वयं उपभोग करने के लिए कृत संकल्प था। **वकील-उस-सल्तनत** का पद ग्रहण करने पर बैरम खां को सत्ता के लिए गुटीय संघर्ष की आशंका थी। इसलिए उसने उन सभी कुलीनों के प्रभाव को समाप्त करने का निश्चय किया जो उसको चुनौती दे सकते थे। उसने अपने कड़े आलोचक शाह अबुल मॉली को पदमुक्त कर जेल में डाल दिया। मॉली कुलीनों के बीच अलोकप्रिय था जिसके कारण बैरम खां की इस कार्यवाही का कोई विशेष विरोध न हुआ।

आगे चलकर ऐसे सभी कुलीनों को काबुल भेज दिया गया जो बैरम खां के लिए खतरा उत्पन्न कर सकते थे। बैरम खां ने काबुल के गवर्नर मुनीम खां तथा अवध में स्थित मुगल सेना के प्रधान अली कुली खां उजबेग के समर्थन को भी प्राप्त करने के प्रयास किये। बैरम खां को मुनीम खां पर विश्वास न था। वह उसको काबुल तक सीमित कर दरबार से दूर रखना चाहता था। जिस समय मई 1556 में मिर्जा सुलेमान ने काबुल पर आक्रमण किया तब उसे मुनीम खां को अलग करने का अवसर प्राप्त हो गया और उसने आगामी चार माह तक मुनीम खां के दरबार के साथ संपर्कों को काट कर रखा और इस बीच बैरम खां ने अपनी स्थिति को दरबार में और सुदृढ़ किया। कुलीनों के बीच लगातार तनाव बढ़ रहे थे और पानीपत की द्वितीय लड़ाई के समय तक यह संकट और भी गहरा हो गया था। तारदी

बेग के नेतृत्व में शाही सेनायें तुगलाकाबाद की लड़ाई में अफगान सेनाओं का सामना करने में असफल रही। इस अवसर का लाभ उठाते हुए बैरम खां ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए विश्वासघात का आरोप लगाकर सम्राट की आज्ञा के बिना तारदी बेग को फांसी देने का आदेश दिया। इससे कुलीन वर्ग में असंतोष बढ़ने लगा। किंतु पानीपत की लड़ाई में बैरम खां की विजय ने उसके सम्मान को पुनः स्थापित करने में सहायता प्रदान की। उसने अपने विश्वासपात्रों को उपाधियां एवं दोआब में जागीरें तथा तरक्की प्रदान कर अपनी स्थिति को ओर मजबूत किया। उसने अपने समर्थकों को कुछ महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया। पीर मोहम्मद खां को अपना व्यक्तिगत **वकील**, ख्वाजा अमीनुद्दीन को **बख्शी** और शेख गदाय को **सदर** नियुक्त किया।

तारदी बेग को फांसी देने के बाद छः माह तक साम्राज्य के मामलों पर बैरम खां का पूर्ण नियंत्रण था। सत्ता पर लगभग अपना पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने के बाद उसने संभावित प्रतिद्वंद्वियों को बादशाह पर प्रभाव कायम करने से रोकने का कार्य किया। मुनीम खां तथा, ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को काबुल भेज दिया गया और उनको दरबार के साथ संपर्क स्थापित करने से रोका गया। बैरम खां की मजबूत होती स्थिति तथा उसके द्वारा वास्तविक सत्ता के उपभोग करने का कुलीनों ने विरोध किया।

बैरम खां की सत्ता के ह्रास का प्रथम साक्ष्य अकबर द्वारा मुनीम खां के दामाद मिर्जा अब्दुल्ला मुगल की पुत्री के साथ विवाह करना था। बैरम खां के प्रबल विरोध के बावजूद यह विवाह संपन्न हुआ था। अप्रैल 1557 में काबुल से हमीदा बानू बेगम के आगमन ने भी बैरम खाँ की स्थिति को प्रभावित किया। हमीदा बानू बेगम के साथ महम अन्गा, भी थी जिसने तारदी बेग की फांसी की घटना के समय बैरम खां का समर्थन किया था।

अब बैरम खां को केन्द्रीय सरकार के कार्यों का संचालन करने में महत्वपूर्ण कुलीनों के साथ समझौता करने को बाध्य होना पड़ा। एक **वकील** के रूप में बैरम खां कुलीनों की सहमति के बगैर राजा के सम्मुख कोई प्रस्ताव न रख सका। इस समझौते ने उसकी ताकत को और क्षीण कर दिया तथा 1558 तक उसका व्यक्तिगत **वकील** पीर मोहम्मद भी उसका विरोधी हो गया।

पुनः अपनी ताकत को प्राप्त करने के लिए 1559 में उसने सत्ता हथियाने का प्रयास किया। इस प्रयास में उसने अपने व्यक्तिगत **वकील** पीर मोहम्मद के स्थान पर मोहम्मद खान सिस्तनी को नियुक्त किया। शेख गदाई को **सदर** के अतिरिक्त अन्य कार्य भार सौंपा गया। कई छोटे अधिकारियों को तरक्की दी गई। किंतु बैरम खां का अधिकतर कुलीनों एवं सम्राट से अलगाव बना रहा। अपनी स्वेच्छाचारिता के कारण उसने कुलीनों के असंतोष में और वृद्धि की।

आर० पी० त्रिपाठी जैसे इतिहासकारों ने बैरम खां की यह कहकर आलोचना की है कि उसने सुन्नियों की उपेक्षा कर शियाओं का पक्ष लिया। इस कारण उसने सुन्नियों को अपना विरोधी बना लिया। किंतु इक्तिदार आलम खान का तर्क है कि यद्यपि बैरम खां शिया था फिर भी ऐसा कोई ऐतिहासिक तथ्य उपलब्ध नहीं होता जिसके आधार पर यह कहा जा सके कि बैरम खां ने धार्मिक आधार पर पक्षपातपूर्ण कार्य किये। वास्तव में बैरम खां का कट्टर समर्थक शेख गदाई जो **सदर** नियुक्त किया गया शिया नहीं बल्कि सुन्नी था। बैरम खां ने अकबर की चतुर्तता का आकलन कम करके देखा। उसने बादशाह के विश्वास को जीतने के लिए कोई प्रयास नहीं किया और जब मार्च 1560 में बादशाह ने बैरम खां को पद से हटाने की घोषणा की तब बैरम खां के सभी वफादारों (विश्वासपात्रों) ने बादशाह का समर्थन किया या फिर वे तटस्थ हो गये।

बैरम खां के संरक्षक काल के अध्ययन से स्पष्ट है कि वास्तविक राजनीतिक सत्ता कुलीन वर्ग में निहित थी। कुलीनों ने बैरम खां के प्रभुत्व को सीमित रूप में ही स्वीकार किया। वे उसकी वास्तविक सार्वभौम सत्ता को स्वीकार करने को तैयार न थे।

अपनी स्थिति को बनाये रखने के लिए उसको कभी कुलीन वर्ग के एक गुट पर निर्भर रहना पड़ता कभी दूसरे पर। इस प्रकार वह स्वतंत्र समर्थकों के एक स्थायी गुट को प्राप्त करने में असफल रहा। वास्तव में उसने अपेक्षाकृत छोटे अधिकारियों के ओहदों में वृद्धि

और उनको तरक्की प्रदान कर कुलीनों के एक बड़े समूह को अपना विरोधी बना लिया। इस प्रक्रिया में उसने अयोग्य अमीरों का भी गठन किया। अपने जीवन के अंत में उसने महसूस किया कि उसके अपने समर्थक भी उसके विरोधी हो गये थे।

बैरम खां तथा कुलीनों के बीच का संघर्ष वास्तव में संरक्षक द्वारा प्रतिनिधित्व करने वाली केन्द्रीय सत्ता एवं कुलीन वर्ग के बीच का संघर्ष था। इस काल के दौरान सम्राट सत्ता का प्रतीक मात्र था और वह बैरम खां के विरोधियों की कठपुतली बना हुआ था। बैरम खां ने मुगल कुलीनों के दो गुटों चगताई तथा खुरासानी कुलीनों को संयुक्त करने का प्रयास किया। लेकिन बैरम खां के इस मेल मिलाप के प्रयास को कुलीनों ने अपनी शक्ति एवं निर्भरता के लिए खतरा समझा। बैरम खां के वफादारों ने भी बैरम खां द्वारा प्रतिनिधित्व की जाने वाली केन्द्रीय प्रभुसत्ता को स्वीकार नहीं किया।

बैरम खां का संरक्षक काल उसके लिए एक संकट बना रहा। जहां एक ओर वह कुलीनों की स्वतंत्रता में कटौती करना चाहता था वहीं दूसरी ओर उसे अपनी सत्ता बनाये रखने के लिए उनके समर्थन की भी आवश्यकता थी। इस कारण उसके संपूर्णकाल में एक विरोधाभास बना रहा। एक नये गुट का गठन कर इसको संतुलित किया जा सकता था, किंतु यह उसके लिए संभव न था। नये गुट का गठन करने के लिए अफगानों को शामिल किया जा सकता था लेकिन वे सिंहासन पर अपना दावा मानते थे। उसके सम्मुख राजपूत सरदारों, जमींदारों एवं स्थानीय सरदारों का विकल्प था। लेकिन इनको शामिल करने का कार्य एक लंबी प्रक्रिया थी। इस प्रकार बैरम खां ने जब कभी भी अपनी स्थिति को मजबूत करने का प्रयास किया तभी दरबारी कुलीनों ने उसका विरोध किया इसके फलस्वरूप वह यदा-कदा स्वयं को अलग-थलग पाता और अंततः उसको सत्ता से हटना पड़ा।

बैरम खां के निष्कासन ने मुगल राजनीति में अंतर्निहित केन्द्रीय सत्ता एवं इसकी विपरीत प्रवृत्ति के बीच के संघर्ष की पुष्टि की। इसकी परणिति केन्द्रीयकृत सत्ता की विरोधी प्रवृत्ति की विजय के रूप में हुई। इस प्रवृत्ति के द्वारा उन मुश्किलों को समझने में मदद मिलती है जिनका सामना अकबर ने सार्वभौम सत्ता को संभालने के बाद 1562-1567 के वर्षों में किया।

हम देखते हैं कि बैरम खां के संपूर्ण संरक्षक काल में राजनीतिक सत्ता तूरानी उत्पत्ति के अन्य गुटों एवं चगताई कुलीनों में निहित थी। बैरम खां तभी तक सत्ता का उपयोग कर सका जब तक इन गुटों ने उसका समर्थन किया। जैसा कि पहले भी बताया गया कि कुलीन गुटों ने बैरम खां की सत्ता को सीमित तौर पर ही स्वीकार किया था न कि एक वास्तविक शासक के रूप में। उन्होंने उसका तब तक विरोध न किया जब तक कि अफगानों को न कुचल दिया गया। लेकिन पानीपत की दूसरी लड़ाई में हेमू की पराजय के बाद उन्होंने संरक्षक के केन्द्रीयकरण की नीतियों का विरोध करना प्रारंभ कर दिया और उसको मुख्य कुलीन गुटों के प्रभुत्व को स्वीकार करने के लिए बाध्य किया।

बोध प्रश्न 1

1) **बैरम खां ने अपनी सत्ता के लिए प्रारंभिक चुनौतियों का सामना कैसे किया?**

....

....

....

....

....

2) **पानीपत की दूसरी लड़ाई के बाद बैरम खां द्वारा सत्ता की पुनर्स्थापना की व्याख्या कीजिए।**

....

....

....

....

....

3) 1557 के बाद बैरम खां की शक्ति के पतन का विवेचन कीजिए।

....

....

....

....

....

6.3 अकबर के अधीन क्षेत्रीय प्रसार

प्रारंभिक समस्याओं का समाधान करने और सिंहासन पर अपने अधिकार को सुदृढ़ करने के बाद अकबर ने मुगल साम्राज्य के क्षेत्रीय प्रसार की नीति का प्रारंभ किया। प्रसार की किसी भी नीति के अनुसरण का अभिप्राय था देश के विभिन्न भागों में विद्यमान भिन्न-भिन्न राजनीतिक शक्तियों के साथ संघर्ष। इनमें से कुछ राजनीतिक शक्तियां सुसंगठित थी। राजपूत राज्य इसी श्रेणी के थे। वे स्वायत्त सरदारों एवं राजाओं के रूप में सारे देश में विद्यमान थे परन्तु वे मुख्य रूप से राजपूताना में विराजमान थे। अफगानों का राजनीतिक नियंत्रण मुख्य तौर पर गुजरात, बिहार एवं बंगाल पर था। दक्खन तथा दक्षिण भारत में खान देश, अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा तथा अन्य दक्षिणी रियासतें विद्यमान थी। उत्तर-पश्चिम भारत में कुछ कबाइलियों के छोटे-छोटे राज्य कायम थे। यद्यपि काबुल तथा कन्धार पर मुगल गुटों का अधिकार था किंतु वे गुट भी अकबर का विरोध करते थे।

अकबर ने सुनियोजित ढंग से साम्राज्य के प्रसार का प्रारंभ किया। यहां पर यह भी याद रखा जाना चाहिए कि मुगल साम्राज्य का महत्वपूर्ण प्रसार अकबर के शासन काल के दौरान हुआ। उसके उत्तराधिकारियों (जहांगीर, शाहजहां तथा औरंगजेब) के शासन काल में साम्राज्य के क्षेत्रीय प्रसार में आंशिक वृद्धि हुई। औरंगजेब के शासन काल में मुख्य प्रसार दक्षिण भारत तथा उत्तर-पूर्वी (असम) भारत को साम्राज्य में शामिल करने के रूप में हुआ।

6.3.1 उत्तर तथा मध्य भारत

प्रथम सैनिक अभियान 1559-60 ई० में ग्वालियर एवं जौनपुर पर अधिकार करने के लिए किया गया। एक संक्षिप्त लड़ाई के बाद राम शाह ने ग्वालियर के किले का समर्पण कर दिया। खान जमां को जौनपुर पर अधिकार करने के लिए भेजा गया। खान जमां ने जौनपुर के अफगान शासकों को पराजित कर उसे मुगल साम्राज्य में शामिल कर लिया।

मध्य भारत में मालवा पर बाजबहादुर का शासन था। उसे अधम खान के नेतृत्व में मुगल सेनाओं ने पराजित कर दिया तथा बाज बहादुर बुरहानपुर की ओर भाग गया।

मध्य भारत में गढ़ कातंग या गोण्डवाना का एक अन्य स्वतंत्र राज्य था। इस राज्य पर दलपत शाह की विधवा रानी दुर्गावती का शासन था। दुर्गावती को 1564 में पराजित कर दिया गया। बाद में 1567 ई० में इस राज्य को अकबर ने दलपत शाह के भाई चन्द्रशाह को सौंप दिया।

इस काल के दौरान अकबर को मध्य भारत में अनेक विद्रोहों का सामना करना पड़ा। अब्दुल्ला खां उजबेग इन विद्रोहों का नेता था। उसके साथ अन्य दूसरे उजबेग भी मिल गये। खान जमां तथा आसफ खां ने भी विद्रोह किया। अकबर ने मुनीम खां की सहायता से इन विद्रोहों का दमन कर दिया और अपनी स्थिति को सुदृढ़ किया।

बैरम खां के पतन के बाद (1560 ई०) कुलीनों के साथ अकबर का जो संघर्ष प्रारंभ हुआ था अब उसका भी अंत हो गया। अकबर ने अपनी कूटनीतिक निपुणता, संगठनात्मक योग्यताओं तथा विश्वसनीय मित्रों की सहायता से इस गंभीर समस्या का समाधान किया।

6.3.2 पश्चिम भारत

राजपूताना की विजय

अकबर का मानना था कि स्थायी साम्राज्य के लिए उसको राजपूताना में विद्यमान राजपूत राज्यों को अपने अधीन करना होगा। अतः अकबर ने इन राज्यों के प्रति एक सुनिश्चित नीति का निर्धारण किया। इन राज्यों को न केवल विजित करने का निर्णय लिया अपितु इसके शासकों को अपना सहयोगी बनाने का निश्चय किया। यहां पर हम अकबर की राजपूत राज्यों के प्रति नीति की विस्तृत विवेचना नहीं करेंगे। (इस नीति का विस्तृत अध्ययन आप खंड-3 की इकाई 11 में करेंगे।) चित्तौड़ के शासक महाराणा प्रताप को छोड़कर सभी राजपूत शासको ने अकबर के प्रति राजभक्ति अभिव्यक्त की। बहुत से राजपूत शासकों को मुगल कुलीनों में शामिल कर लिया गया और इस प्रकार अकबर ने न केवल मुगल साम्राज्य का प्रसार किया अपितु उसे सुदृढ़ भी किया।

राजा सुरजन हाड़ा द्वारा रणथम्भौर के किले की चाभियों का समर्पण

गुजरात की विजय

अकबर ने मध्य भारत तथा राजपूताना में अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के बाद 1572 ई० में गुजरात पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। गुजरात से हुमायूं के वापस लौट जाने के बाद से कोई संगठित राज्य कायम न हो सका था तथा वहां के छोटे-छोटे राज्यों के बीच निरंतर आपसी वैमनस्य बना रहता। गुजरात जहां एक ओर कृषि की दृष्टि से अत्यंत उपजाऊ क्षेत्र था वहीं दूसरी ओर वहां पर अनेकों व्यस्त बंदरगाह थे और व्यापारिक केंद्रों का तेजी से विकास हो रहा था।

सुल्तान मुजफ्फर शाह तृतीय नाम मात्र का शासक था और सात युद्धरत रियासतें उसके अधीन थी। राजकुमार इतिमाद खां ने इन रियासतों को विजित करने के लिए अकबर को आमंत्रित किया। स्वयं अकबर ने अहमदाबाद की ओर कूच किया। बगैर किसी गंभीर विरोध के नगर पर अधिकार कर लिया गया। सूरत की मजबूत किलेबंदी के कारण कुछ प्रतिरोध का सामना करना पड़ा लेकिन उस पर भी अधिकार कर लिया गया। थोड़े ही समय में गुजरात की सभी रियासतों ने अकबर के आधिपत्य को स्वीकार कर लिया। अकबर ने गुजरात को एक प्रांत के रूप में संगठित किया और उसको मिर्जा अजीज कोका के अधीन कर स्वयं राजधानी वापस लौट आया। छः माह के अंदर ही बहुत से विद्रोही गुट एकीकृत हो गये और उन्होंने मुगल शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। विद्रोह के नेता इखत्यारुल मुल्क एवं मोहम्मद हुसैन मिर्जा थे। मुगल गवर्नर को अनेक क्षेत्रों का परित्याग करना पड़ा। आगरा में अकबर ने विद्रोह का समाचार पाकर पुनः अहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया। अकबर के इस अभियान को सबसे अधिक द्रुत गति का माना गया है। वह प्रतिदिन 50 मील का मार्ग तय करता हुआ 10 दिन के अंदर गुजरात पहुंच गया और विद्रोह को कुचल दिया।

गुजरात में लगभग एक दशक तक शांति बनी रही। इसी बीच मुजफ्फर तृतीय नजरबंदी से भाग गया और उसने जूनागढ़ में शरण ली। 1583 ई० के बाद उसने कुछ विद्रोहों को संगठित करने का प्रयास किया।

6.3.3 पूर्वी भारत

शेरशाह के हाथों हुमायूं की पराजय के बाद से ही बिहार तथा बंगाल पर अफगानों ने शासन किया। सन् 1564 ई० में बिहार के गवर्नर सुलेमान करानी ने बंगाल को भी अपने अधीन कर लिया था। सुलेमान ने अकबर की बढ़ती शक्ति को रेखांकित करते हुए मुगलों

सूरत विजय : अकबर का सूरत शहर में प्रवेश

की अधीनता को स्वीकार कर लिया। वह अकबर को कुछ उपहार भी भेजा करता। 1572 ई० में उसकी मृत्यु के पश्चात कुछ संघर्ष के बाद उसके छोटे पुत्र दाऊद ने उसके सिहांसन पर अधिकार कर लिया। दाऊद ने मुगलों की अधीनता को मानने से इंकार कर दिया और जौनपुर के मुगल गवर्नर के साथ संघर्ष करने लगा।

अकबर की बंगाल में सफलता : दाउद शाह को कैद कर मुगल खेमें में लाना

1574 ई० में अकबर ने मुनीम खां खान-ए-खाना के साथ बिहार की ओर प्रस्थान किया। थोड़े समय में ही हाजीपुर तथा पटना पर अधिकार कर लिया गया तथा दाऊद गढ़ी की ओर भाग गया। कुछ समय तक वहां पर ठहरने के बाद अकबर वापस लौट आया। मुनीम खां तथा टोडरमल ने दाऊद का पीछा किया और उसने मुगलों के सम्मुख समर्पण कर दिया। कुछ समय के बाद उसने पुनः विद्रोह किया। खान-ए जहां के अधीन मुगल सेनाओं ने उसका वध कर दिया और गौड़ (बंगाल) प्रदेश को भी मुगलों ने अपने अधीन कर लिया। इससे लगभग दो सौ साल (कुछ अपवादों को छोड़कर) से चले आ रहे बंगाल के स्वतंत्र शासन का अंत हो गया। उड़ीसा के कुछ भाग अब भी अफगान सरदारों के अधीन थे। 1592 ई० के आस-पास मान सिंह ने संपूर्ण उड़ीसा को भी मुगल साम्राज्य के अधीन कर लिया।

6.3.4 1581 ई० के विद्रोह

वी०ए० स्मिथ के अनुसार "यदि अकबर के अपनी शक्ति के सुदृढ़ करने वाले प्रारंभिक वर्षों पर ध्यान न दिया जाए तब अकबर के शासन काल में 1581 का वर्ष सबसे बड़े संकट का वर्ष था।"

कुलीन वर्ग के 1567 तक चलने वाले संघर्ष के बाद पुनः बंगाल, बिहार, गुजरात तथा उत्तर-पश्चिम में गंभीर संघर्ष उभर कर सामने आये। इन विद्रोहों की जड़ों में उन अफगानों का असंतोष था जिनको मुगलों द्वारा सभी स्थानों से हटाया जा चुका था। इसके अतिरिक्त अकबर के जागीर प्रशासन की कड़ी नीति भी इसके लिए उत्तरदायी थी। इस नयी नीति के द्वारा जागीरदारों को आदेश दिया गया कि वे अपनी-अपनी जागीरों का लेखा-जोखा जमा करें और सैनिक खर्चों में कटौती की गई थी। बंगाल के गवर्नर ने इन आदेशों को शक्ति के साथ लागू किया। इस नीति ने वहां विद्रोह को जन्म दिया। शीघ्र ही विद्रोह बिहार में फैल गया। मासूम खां काबुली, रोशन बेग, मिर्जा शर्फुद्दीन तथा अरब बहादुर इस विद्रोह के मुख्य नेता थे। मुजफ्फर खान तथा रायपुरुषोत्तम एवं अन्य अधिकारियों ने इन विद्रोहों का दमन करने का प्रयास किया किंतु वे असफल रहे। अकबर ने तुरंत राजा टोडरमल तथा शेख फरीद बक्शी के नेतृत्व में एक बड़ी सेना को भेजा। कुछ समय बाद टोडरमल की सहायता के लिए अजीज कोका तथा शाहबाज खां को भेजा गया। इसी बीच काबुल में विद्रोहियों ने अकबर के भाई हकीम मिर्जा को अपना राजा घोषित कर दिया। मुगल सेनाओं ने बिहार, बंगाल तथा आसपास के क्षेत्रों में विद्रोहों को कुचल दिया। कुछ विद्रोही नेताओं ने बचकर बंगाल के जंगल में शरण ली। ये नेता अपने अधिकांश समर्थकों को खो चुके थे फिर भी कुछ वर्षों तक बगैर किसी विशेष प्रभाव के मुगल अधिकारियों को अपने छोटे-मोटे हमलों द्वारा परेशान करते रहे।

मिर्जा हकीम ने अकबर पर दबाव बढ़ाने के लिए लाहौर पर आक्रमण किया। अकबर ने भी लाहौर की ओर प्रस्थान किया। हकीम मिर्जा ने जैसे ही अकबर के प्रस्थान का समाचार सुना वैसे ही वह पीछे हट गया। हकीम मिर्जा का अनुमान था कि अधिकतर मुगल अधिकारी उसके साथ शामिल हो जाएंगे किंतु उसका अनुमान गलत साबित हुआ। अकबर ने उत्तर-पश्चिम सीमा की सुरक्षा संगठित करने के बाद एक सेना को काबुल भेजा। अकबर ने भी काबुल की ओर प्रस्थान किया। समय रहते अकबर भी काबुल पहुंच गया। हकीम मिर्जा ने काबुल का परित्याग कर दिया तथा अकबर ने इस पर अपना अधिकार कर लिया। अकबर ने काबुल को अपनी बहन बख्तुनिसा बेगम के अधीन कर दिया तथा आगरा वापस लौट आया। कुछ समय बाद हकीम मिर्ज़ा भी वापस लौट आया और उसने अपनी बहन के नाम से शासन चलाना जारी रखा। चार वर्ष बाद मिर्जा हकीम की मृत्यु हो गई तथा अकबर ने राजा मान सिंह को काबुल का गवर्नर नियुक्त किया।

जिस समय बिहार, बंगाल एवं उत्तर-पश्चिमी प्रांतों में विद्रोह हुए लगभग उसी समय गुजरात में भी विद्रोह हुआ। यहां पर मुजफ्फर शाह नजरबंदी से भाग गया और उसने विद्रोह का संगठन किया। उसने गुजरात के मुगल क्षेत्रों पर आक्रमण करने शुरू कर दिये। इतिमाद खां को गुजरात का उप-गवर्नर (Section top) नियुक्त किया गया। विद्रोहियों के विरुद्ध इस अभियान में निजामुद्दीन अहमद ने **बक्शी** की हैसियत से सहायता की। 1584 ई० में मुजफ्फर शाह को अहमदाबाद तथा नानदेद में पराजित कर दिया गया। वह बचकर कच्छ क्षेत्र की ओर भाग गया। निजामुद्दीन अहमद ने उसका यहां पर भी पीछा किया। संपूर्ण कच्छ क्षेत्र में अनेकों किलों को उखाड़ फेंका गया तथा मुगल अधिकारियों को वहां पर नियुक्त कर दिया गया। मुजफ्फर कोई न कोई समस्या खड़ी करता रहा और उसे अंतिम रूप से 1591-92 तक गिरफ्तार कर लिया गया।

6.3.5 उत्तर-पश्चिम में विजय

हकीम मिर्जा की मृत्यु के बाद काबुल को मुगल साम्राज्य में शामिल कर राजा मान सिंह को उसे जागीर के रूप में सौंप दिया गया। ठीक उसी समय अकबर ने उत्तर-पश्चिम में हो रहे विद्रोहों को दबाने एवं नये क्षेत्रों को विजय करने का निर्णय किया।

रोशनयों का दमन

इस क्षेत्र में अकबर का सर्वप्रथम ध्यान रोशनाई आंदोलन की ओर आकर्षित हुआ। रोशनाई एक संप्रदाय था जिसका गठन सीमा क्षेत्र में पीर रोशनाई नाम के एक सिपाही ने किया था। उसको व्यापक समर्थन प्राप्त था। उसकी मृत्यु के बाद उस संप्रदाय का मुखिया उसका पुत्र जलाल बन गया। रोशनाइयों ने मुगलों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और काबुल

तथा हिन्दुस्तान के बीच के मार्ग को काट दिया। अकबर ने रोशनाइयों के विद्रोह का दमन करने तथा इस क्षेत्र में मुगल सत्ता को स्थापित करने के लिए जैन खां को एक शक्तिशाली सेना का सेनापति नियुक्त किया। जैन खां की सहायता हेतु सैयद खां घक्खर तथा राजा बीरबल को अलग सेना के साथ भेजा गया। एक अभियान के दौरान राजा बीरबल लगभग अपने आठ हजार सैनिकों के साथ मारा गया। उसी के साथ जैन खां को भी पराजित कर दिया किंतु वह जीवित रहकर किसी प्रकार से अकबर के पास अटक के किले में पहुंचा। अकबर को राजा बीरबल की मृत्यु से बहुत बड़ा आघात लगा क्योंकि वह उसके अत्यंत प्रिय साथियों में से एक था। अकबर ने इस क्षेत्र पर अधिकार करने के लिए एक शक्तिशाली सेना का सेनानायक राजा टोडरमल को नियुक्त किया। राजा मान सिंह से भी कार्यवाही करने को कहा गया। इन दोनों के संयुक्त अभियान के कारण रोशनयों को पराजित कर दिया गया।

कश्मीर की विजय

अकबर की दृष्टि बहुत दिन से कश्मीर को विजित करने पर लगी थी। वह जिस समय अटक में पड़ाव डाले हुए था तभी उसने राजा भगवान दास तथा शाह कुली महरम के नेतृत्व में कश्मीर की विजय के लिए सेना भेजी। कश्मीर के राजा यूसुफ खां को पराजित कर दिया गया और उसने मुगलों की अधीनता को स्वीकार कर लिया। किंतु अकबर इस संधि से बहुत प्रसन्न न था क्योंकि वह कश्मीर को अपने साम्राज्य में शामिल करना चाहता था। यूसुफ खां के पुत्र याकूब ने कश्मीर के अन्य अमीरों के साथ मिलकर मुगलों का विरोध करने का निर्णय किया और युद्ध का प्रारंभ कर दिया। किंतु कश्मीर की सेना में कुछ असंतोष उत्पन्न हो गया। अंततः मुगल सेनाओं ने विजय प्राप्त की और कश्मीर को सन् 1586 ई० में मुगल साम्राज्य में शामिल कर लिया गया।

थट्टा (सिंध) की विजय

उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र के सिंध प्रांत में थट्टा नाम का क्षेत्र भी अभी तक स्वतंत्र था। अकबर ने खान-ए-खानान को मुल्तान का गवर्नर नियुक्त किया और 1590 में उसको सिंध विजय तथा बलूचियों का दमन करने का आदेश दिया। थट्टा को विजित कर लिया गया तथा इसे इस सूबे की एक सरकार के तौर पर मुल्तान के गवर्नर के अधीन कर दिया गया।

समीप के क्षेत्र में मुगल सेनाओं ने बलूचियों का दमन जारी रखा। सन् 1595 ई० में अंतिम तौर पर उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र पर मुगलों की सर्वोच्चता को स्थापित कर दिया गया।

6.3.6 दक्खन तथा दक्षिण

गुजरात तथा मालवा में विजय हासिल करने के बाद अकबर ने दक्खन के राज्यों अहमदनगर, बीजापुर तथा गोलकुण्डा में रुचि लेना प्रारंभ कर दिया। प्रारंभिक संपर्क दूत भेजने तथा यदा-कदा भेंट तक ही सीमित था। 1590 ई० के बाद अकबर ने इन राज्यों को मुगल नियंत्रण के अधीन करने के लिए योजना बनाना शुरू कर दिया। इस समय के आस-पास दक्खन राज्यों में आंतरिक एवं आपसी कलह भी चल रहा था।

अकबर ने 1591 ई० में दक्खन के राज्यों को मुगल साम्राज्य की सर्वोच्चता स्वीकार करने के लिए दूतों को भेजा। फैजी को असीर तथा बुरहानपुर (खानदेश) ख्वाजा अमीनुद्दीन को अहमदनगर, मीर मौहम्मद अमीन मशदी को बीजापुर तथा मिर्जा मसूद को गोलकुण्डा भेजा गया। 1593 तक ये सभी मिशन बगैर किसी सफलता के वापस लौट आये। यह कहा गया कि केवल खानदेश के शासक अली खाँ ने मुगलों की इस नीति में रुचि दिखायी। अकबर ने सैन्य शक्ति का अनुसरण करने का निर्णय किया। यहां पर हम मुगलों की दक्खन नीति की कोई विस्तृत चर्चा न करके अपितु दक्खन में उनके क्षेत्रीय विस्तार का विवरण करेंगे। दक्खन नीति की विस्तृत चर्चा खण्ड-3 की इकाई-9 में की जाएगी।

प्रथम सैनिक अभियान शहजादा मुराद तथा अब्दुर रहीम खान खाना के नेतृत्व में खानदेश भेजा गया। 1595 ई० में मुगल सेनाओं ने अहमदनगर पर अधिकार कर लिया। इसकी शासिका चांद बीबी ने एक विशाल सेना का नेतृत्व करते हुए मुगलों का सामना किया।

उसने बीजापुर के शासक इब्राहीम अली शाह तथा गोलकुण्डा के शासक कुतुब शाह से सहायता का आग्रह किया किंतु कोई सफलता न मिली। चांद बीवी ने मुगल सेनाओं का कड़ा प्रतिरोध किया। दोनों ओर से भारी नुकसान के बाद एक संधि का मसौदा तैयार किया गया। इस संधि के अनुसार चांद बीवी ने बरार का समर्पण मुगलों को कर दिया। कुछ समय बाद चांद बीवी ने बरार को वापस लेने के लिए उस पर आक्रमण किया। इस समय निजामशाही कुतुबशाही तथा आदिलशाही सेनाओं ने संयुक्त तौर पर मुगल सेना का मुकाबला किया। मुगलों को भारी नुकसान उठाना पड़ा किंतु वे किसी प्रकार से मैदान में डटे रहे। इसी बीच मुराद एवं खान खाना के बीच मतभेद हो जाने के कारण मुगल सेना की स्थिति कमजोर पड़ गयी। इसलिए अकबर ने अबुल फजल को दक्खन के अभियान पर भेजा और खान खाना को वापस बुला लिया। 1598 में शहजादा मुराद की मृत्यु के पश्चात शहजादा दानियाल तथा खान खाना को दक्खन भेजा गया। अकबर भी उनके साथ शामिल हो गया। प्रथम अहमदनगर पर अधिकार कर लिया गया। इसी बीच चांद बीवी की मृत्यु हो गई। 1600 ई० में असीरगढ़ तथा आस-पास के क्षेत्रों को मुगल सेनाओं ने विजित कर लिया। बीजापुर के शासक आदिल शाह ने मुगलों की सर्वोच्चता को स्वीकार कर लिया तथा शहजादा दानियाल के साथ अपनी पुत्री का विवाह करने की पेशकेश की। दक्खन में मुगल साम्राज्य में असीरगढ़, बुरहानपुर,अहमदनगर तथा बरार को शामिल कर लिया गया।

बोध प्रश्न 2

1) गुजरात को कैसे मुगल शासन के अधीन किया गया?

....

....

....

....

....

2) 1581 के विद्रोह से कौन-कौन से क्षेत्र प्रभावित थे?

....

....

....

....

....

6.4 प्रशासनिक पुनर्गठन

अकबर की विजयों एवं क्षेत्रीय प्रसार की नीति मुगल प्रशासनिक ढांचे में नये क्षेत्रों को सुदृढ़ करने के साथ-साथ चली।

सूबों का निर्माण

1580 ई० में अकबर ने संपूर्ण साम्राज्य को मुगलों के अधीन 12 प्रांतों में विभाजित कर दिया और जिनको **सूबा** कहा गया। ये **सूबे** इलाहाबाद,आगरा, अवध, अजमेर, अहमदाबाद (गुजरात), बिहार, बंगाल (उड़ीसा सहित), दिल्ली, काबुल, लाहौर, मुल्तान तथा मालवा थे। दक्खन की विजय के बाद तीन नये सूबों को शामिल कर लिया गया तथा अब इनकी संख्या 15 हो गई। ये तीन सूबे थे बरार, खानदेश तथा अहमदनगर। इन प्रांतों पर सुनिश्चित नियमों के अनुसार तथा इनमें नियुक्त अधिकारियों द्वारा शासन किया जाता था। प्रांतीय प्रशासन की विस्तृत विवेचना खंड-4 की इकाई-14 में की जाएगी।

THE MUGHAL EMPIRE - 1601
Empire boundary
Suba boundary
Independent States
THE UZBEK KHANATE
HISSAR
MERV
BALKH
BADAKHSHAN
KABUL
KASHMIR
LAHORE
QANDAHAR
MULTAN
DELHI
DELHI
AJMER
AGRA
AWADH
ALLAHABAD
BIHAR
BENGAL
ASHAM
THATTA
GUJARAT
MALWA
KHANDESH
BERAR
BASTAR
ORISSA
RAKHANG (ARAKAN)
PEGU (BURMA)
AHMADNAGAR
GOLKONDA
BIJAPUR
VIJAYANAGAR (KARNATAK)
MALABAR
CEYLON
ARABIAN SEA
BAY OF BENGAL

सैन्य प्रशासन

अकबर ने सैन्य प्रशासन को भी एक नया स्वरूप प्रदान किया। उसने सेना को संगठित करने के लिए पूर्ववर्ती परंपराओं तथा नवीन उपायों का संयुक्त रूप से उपयोग किया और उसने एक केन्द्रीकृत सैन्य ढांचे को विकसित करने का प्रयास किया। उसने सैन्य एवं नागरिक अधिकारियों को उनकी योग्यता या राज्य की सेवा के आधार पर **मनसब** प्रदान किया। **मनसब** का शाब्दिक अर्थ है पद और **मनसबदार** का तात्पर्य है पद को धारण करने वाला। अकबर ने अपनी **मनसबदारी** व्यवस्था में 66 स्तरों की रचना की अर्थात दस सैनिकों के नेतृत्व (**दहबाशी**) से दस हजार सैनिको (**दहहजारी**) तक का नेतृत्व करना।

सभी **मनसबदारों** को नकद धन या जागीर के रूप में अदायगी की जाती थी। अकबर के शासन काल में जिस सैन्य प्रशासन को विकसित किया गया था उसके उत्तराधिकारियों के शासन के दौरान उसमें कई परिवर्तन किये गये। यहां पर हम **मनसब** व्यवस्था का विस्तृत विवरण नहीं करेंगे अपितु इसका विस्तृत विवरण खण्ड-4 की इकाई-15 में किया जाएगा।

6.5 अकबर के उत्तराधिकारियों के अधीन क्षेत्रीय प्रसार

अकबर के क्षेत्रीय प्रसार ने मुगल साम्राज्य को एक निश्चित स्वरूप प्रदान किया उसके उत्तराधिकारियों अर्थात जहांगीर, शाहजहां तथा औरंगजेब के शासन काल में क्षेत्रीय प्रसार में कोई विशेष वृद्धि नहीं हुई। हम देखते हैं कि औरंगजेब के बाद साम्राज्य का बिखरना प्रारंभ हो गया था। इस भाग में हम अकबर के उत्तराधिकारियों के शासन के दौरान हुए क्षेत्रीय प्रसार का उल्लेख करेंगे। उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में रोशनयों पर 1625-26 में निर्णायक विजय प्राप्त कर ली गई थी। अब कन्धार ईरानियों तथा मुगलों के बीच संघर्ष का क्षेत्र बन गया। अकबर की मृत्यु के पश्चात सफ़वी वंश के शासक शाह अब्बास के अधीन ईरानियों ने कंधार पर अपना अधिकार करने का प्रयास किया किंतु वे असफल रहे। इसका अनुसरण करते हुए 1620 ई० में शाह अब्बास ने जहांगीर से कंधार देने का अनुरोध किया किंतु जहांगीर ने ऐसा करने से इंकार कर दिया। 1622 ई० में एक अन्य आक्रमण द्वारा ईरानियों ने कंधार पर अधिकार कर लिया। कंधार पर अधिकार करने के लिए औरंगजेब के शासन काल तक संघर्ष चलता रहा किंतु मुगलों को बहुत कम सफलता प्राप्त हुई। इसका विस्तृत विवरण इकाई-7 में किया जाएगा।

राजपूताना में मेवाड़ एक ऐसा क्षेत्र था जो अकबर के शासन काल में मुगल साम्राज्य का अंग न बन सका था। इस पर अधिकार करने के लिए जहांगीर ने एक सुनिश्चित नीति का अनुसरण किया। अनेकों संघर्षों के बाद राणा अमर सिंह ने अंततः मुगलों की अधीनता को स्वीकार कर लिया। चित्तौड़ के किले सहित मेवाड़ से जितना भी क्षेत्र लिया गया था उसे अमर सिंह को वापस लौटा दिया गया और उसके पुत्र करण सिंह को एक बड़ी जागीर प्रदान की गई। अकबर के उत्तराधिकारियों के शासन के दौरान राजपूतों के मुगलों के साथ मित्रतापूर्ण संबंध जारी रहे। मुगल शासकों द्वारा उन्हें ऊंचे-ऊंचे **मनसब** दिये गए।

अकबर के शासन के अंतिम वर्षों तथा जहांगीर के प्रारंभिक वर्षों में मलिक अंबर के नेतृत्व में अहमदनगर ने मुगल सत्ता को चुनौती देना प्रारंभ कर दिया। मलिक अंबर बीजापुर का समर्थन प्राप्त करने में भी सफल हो गया। जहांगीर ने अनेकों सैनिक अभियानों को वहां पर भेजा किंतु वे कोई सफलता प्राप्त करने में असमर्थ रहे। शाहजहां के शासनकाल में पुनः मुगलों का संघर्ष दक्खन के राज्यों अहमदनगर,बीजापुर एवं गोलकुण्डा के साथ प्रारंभ हो गया। अहमदनगर ऐसा प्रथम राज्य था जिसको पराजित कर उसके क्षेत्र को मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया था। 1636 ई० तक बीजापुर तथा गोलकुण्डा को भी पराजित कर दिया गया किंतु इन राज्यों को मुगल साम्राज्य में शामिल नहीं किया गया। एक संधि के बाद पराजित राज्यों ने नजराना देना एवं मुगल प्रभुत्व को स्वीकार किया। लगभग 10 वर्षों तक शाहजहां ने अपने पुत्र औरंगजेब को दक्खन का गवर्नर बनाकर रखा। इस समय के दौरान इस क्षेत्र में मराठों का एक शक्तिशाली राजनीतिक शक्ति के रूप में उत्थान हो

रहा था। वास्तव में औरंगजेब ने अपने शासन काल के अंतिम 20 वर्ष दक्खन में युद्ध करने में व्यतीत किये। 1687 ई० तक दक्खन के बीजापुर तथा गोलकुण्डा राज्यों को मुगल साम्राज्य के अधीन कर लिया गया। दक्खन राज्यों के साथ मुगलों के संबंधों की विस्तृत विवेचना खंड-3 में की जाएगी।

उत्तरपूर्व विजय

औरंगजेब के काल में उत्तर-पूर्व के क्षेत्र में असम विजय मुगलों की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। 1661 ई० में बंगाल के गवर्नर मीर जुमला ने इस राज्य पर आक्रमण किया। मीर जुमला के पास 12,000 घुड़सवार, 30,000 पैदल सैनिक और बड़ी संख्या में नावों पर तोपखाना था। अहोम (असम के शासक) प्रतिरोध बहुत कमजोर था। अहोम राज्य की राजधानी कामरूप पर मुगल अधिकार स्थापित हो गया। राजा राजधानी छोड़कर भाग गया। 1663 में राजा स्वर्गदेव ने समर्पण कर दिया और शांति स्थापित हुई। असम को मुगल साम्राज्य में मिलाया गया और मुगल अधिकारियों की नियुक्ति की गई। 1663 में मीर जुमला की मृत्यु हो गई। उत्तर-पूर्व में मुगलों को दूसरी बड़ी सफलता बंगाल के नये गवर्नर शाइस्ता खां के काल में मिली। 1664 में उसने सफलतापूर्वक चटगांव पर अधिकार कर लिया।
मुगल बहुत लंबे समय तक अहोम राज्य पर अपना नियंत्रण बनाए रखने में सफल न हो सके वहां नियुक्त मुगल फौजदारों को कई प्रतिरोधों का सामना करना पड़ा। 1680 में अहोम कामरूप पर पुनः नियंत्रण स्थापित कर सके और प्रत्यक्ष मुगल नियंत्रण समाप्त हुआ।

6.6 स्वायत्त सरदारों के प्रति नीतियां

मुगल साम्राज्य को सुदृढ़ करने के प्रयासों में अकबर ने अपना ध्यान स्वायत्त सरदारों (chieftains) की ओर भी आकृष्ट किया। सरदार शब्द का प्रयोग उन शासक वंशों के लिए किया गया है जो संपूर्ण देश में फैले हुए छोटे-छोटे क्षेत्रों में किसी न किसी रूप में शासन करते थे। (इतिहासकारों के बीच इस शब्द के प्रयोग पर आम सहमति है) इन शासकों को मुगलों के साथ संबंधों में एक विशिष्ट प्रकार का दर्जा प्राप्त था। जहां एक ओर वे अपने शासित क्षेत्र पर अपना प्रशासन चलाने के लिए स्वतंत्र थे वहीं पर वे मुगल साम्राज्य के परिप्रेक्ष्य में एक सहायक की स्थिति रखते थे।

अकबर की सफलता इस तथ्य में निहित थी कि वह अपने साम्राज्य के स्थायित्व के लिए इन सरदारों का समर्थन प्राप्त करने में सक्षम रहा और अकबर के उत्तराधिकारियों ने भी लगभग इसी नीति का अनुसरण किया।

सरदारों की सत्ता का चरित्र

समकालीन विवरणों में इन सरदारों का उल्लेख **राय, राणा, रावत, रावल, राजा, मराजबान, कलन्तरान** (अंतिम दो नाम फारसी के हैं) आदि के रूप में हुआ है। कभी-कभी जमींदार शब्द का प्रयोग साधारण भूमि स्वामी तथा सरदारों दोनों के लिए हुआ है। मुगल प्रभुत्व के अधीन जमींदार स्वतंत्र न थे जबकि सरदारों को अपने शासित क्षेत्रों में पर्याप्त स्वायत्तता प्राप्त थी तथा ये मुगल शासकों के साथ एक विभिन्न प्रकार का संबंध रखते थे।

सरदारों के साथ मुगलों का संघर्ष

लोदियों की पराजय के बाद बाबर के आधीन भारत की केन्द्रीय सत्ता को अफगानों तथा स्वायत्त सरदारों के संयुक्त विद्रोहों का सामना करना पड़ा। हुमायूं को भी उनकी शत्रुता का सामना करना पड़ा।

सरदारों के साथ अकबर का प्रारंभिक संपर्क संघर्षों तथा युद्धों के माध्यम से हुआ। कई मामलों में ये सरदार मुगल एवं अफगान विद्रोहियों के साथ मिल गये। मुगल सत्ता के

सुदृढ़ीकरण एवं विजयों की प्रक्रिया में अकबर ने सरदारों का समर्थन प्राप्त किया और कई ने मुगलों की अधीनता को भी स्वीकार किया। अकबर की इन सरदारों के प्रति कोई घोषित औपचारिक नीति न थी। समकालीन स्रोतों में उपलब्ध संदर्भों के आधार पर हमें मुगलों तथा सरदारों के बीच के संबंधों की जानकारी प्राप्त होती है। उनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है:

1) विजय के पश्चात या उनके द्वारा अधीनता स्वीकार करने के बाद उनको अपने क्षेत्रों का प्रशासन करने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया गया। उनके पास राजस्व एकत्रित करने, व्यवसायिक कर तथा पारगमन कर (पथकर) आदि करों को लगाने के अधिकार थे। राजस्व एकत्रित करने में सरदार मुगल अधिनियमों की अपेक्षा स्थानीय परंपराओं का अनुसरण करते थे।

2) ये स्वायत्त सरदार मुगलों के लिए सैन्य सेवायें भी करते थे। उनको जागीरें एवं **मनसब** प्रदान किये जाते थे। ए०आर० खान के अनुसार अकबर के शासन के दौरान लगभग 61 राजाओं और सरदारों को **मनसब** प्रदान किये गये। इसी प्रकार की परंपरा का निर्वाह अन्य मुगल सम्राटों द्वारा भी किया गया।

3) जिन मामलों में सरदारों को **मनसबदार** नहीं बनाया गया वे भी अक्सर शत्रुओं के विरुद्ध चलाये गये सैनिक अभियानों एवं विद्रोहों का दमन करने में मुगल सेनाओं की मदद करते थे। संपूर्ण मुगल शासन के दौरान इन सरदारों ने न केवल विशाल क्षेत्रों को विजित करने में मदद की अपितु उन्होंने कई स्वायत्त शासकों के विरुद्ध भी मुगलों की सहायता की।

4) सैन्य मदद उपलब्ध कराने के अतिरिक्त अक्सर इन सरदारों को प्रशासन में **सूबेदार** (गवर्नर), **दीवान, बख्शी** आदि जैसे महत्वपूर्ण पदों पर भी नियुक्त किया जाता था।

अकबर को नज़राना पेश करते हुए एक स्वायत्त सरदार

5) अन्य जागीरों के अतिरिक्त उनको अक्सर जागीर के तौर पर उनके अपने क्षेत्रों को भी दिया जाता जिन्हें **वतन जागीर** कहा जाता। ये जागीरें पैतृक एवं अपरिवर्तनीय थीं।

6) उनके संबंधों की एक मुख्य विशेषता यह भी थी कि यदि परिवार के अंदर शासक को लेकर किसी प्रकार का विवाद उठ खड़ा होता तब सरदार के अधिकारों को मान्यता प्रदान करने का अधिकार मुगल सम्राटों को था। जिन सरदारों ने मुगलों की अधीनस्थता को स्वीकार किया उनको मुगल सम्राटों ने सैनिक सुरक्षा भी प्रदान की।

7) सरदारों से यह आशा की जाती थी कि वे मुगल सम्राट को लगातार नजराना देते रहे इसको **पेशकश** कहा गया। इस **पेशकश** के वास्तविक चरित्र को पहचान पाना कठिन है। उस समय इसको नकदी, तथा अन्य बहुमूल्य वस्तुओं जैसे हीरे, सोना एवं हाथियों के रूप में अदा करना होता था।

8) मुगल शाही परिवार तथा सरदारों के बीच वैवाहिक संबंधों को भी कायम किया गया।

सरदारों के विद्रोह

सरदारों द्वारा किये गये बहुत से विद्रोहों के विवरण हमें मिलते हैं। इस प्रकार के विद्रोहों के कारणों के विषय में समकालीन ग्रंथों ने अक्सर राजस्व या नजराने की अदायगी न करना बताया है। विद्रोहों की स्थिति में अधिकांशतः सरदारों को उनके क्षेत्र से बेदखल नहीं किया गया अपितु फिर उन्हें या परिवार के किसी अन्य सदस्य को उस क्षेत्र को सौंप दिया जाता। अगर कुछ अन्य मामलों में किसी सरदार को उसके क्षेत्र से बेदखल कर दिया जाता तब यह केवल डांट फटकार के लिए होता था और कुछ समय बाद उसी को या उसके किसी परिवार के सदस्य को सत्ता में पुनः स्थापित कर दिया जाता।

सरदारों के प्रति जिस नीति का प्रारंभ अकबर ने किया था वह आगामी मुगल सम्राटों के शासन काल में भी जारी रही। इन सरदारों को मुगल कुलीनों या **मनसबदार** के रूप में शामिल करने की नीति साम्राज्य के लिए अति लाभप्रद साबित हुई। मुगल सम्राटों ने सरदारों का समर्थन तथा नवीन विजयों के लिए उनकी सेवायें प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की। मुगल कुलीनों के रूप में इस विशाल साम्राज्य के प्रशासन का संचालन करने में इन सरदारों ने महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की। इन सरदारों के साथ मित्रतापूर्ण संबंधों ने साम्राज्य के लिए शांति को सुनिश्चित किया।

इस नीति से सरदारों को भी लाभ हुआ। अब वे अपने क्षेत्र को अपने पास बनाये रख सकते थे और अपनी इच्छानुसार अपने क्षेत्र का प्रशासन चला सकते थे। इसके अतिरिक्त उन्होंने अन्य **जागीरें** तथा **मनसब** भी प्राप्त किये। कई बार उनको प्रदान की गई जागीर उनके स्वयं के क्षेत्र की अपेक्षा बड़ी होती थी। साथ ही साथ उनको अपने शत्रुओं के तथा विद्रोहियों के विरुद्ध मुगल साम्राज्य की सुरक्षा भी प्राप्त हुई।

बोध प्रश्न 3

1) 1580 में निर्मित सूबों की सूची बताइये।

....

....

....

....

....

2) औरंगजेब के शासन के दौरान क्षेत्रीय प्रसार संबंधा उपलब्धियों को बताइये।

....

....

....

....

....

3) सरदारों के प्रति मुगल नीति कैसे पारस्परिक लाभ के लिए थी।

....

....

....

....

....

6.7 सारांश

हमने इस इकाई में अध्ययन किया कि अकबर काफी कम आयु में सम्राट बन गया था। कम आयु के युवा सम्राट के लिए बैरम खां ने प्रथम चार वर्ष तक संरक्षक के रूप में कार्य किया। मुगल कुलीन वर्ग कई गुटों में विभाजित था और वे अपनी-अपनी सर्वोच्चता को स्थापित करना चाहते थे। अकबर ने धीरे-धीरे स्थिति को अपने नियंत्रण में कर लिया तथा ऐसे कुलीनों का एक गुट निर्मित किया जो उसके प्रति समर्पित था। इस समय मुगल साम्राज्य का नियंत्रण एक सीमित क्षेत्र तक ही था।

अकबर ने विजयों की नीति का प्रारंभ किया और पूर्व, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण के विशाल क्षेत्रों को मुगल साम्राज्य के अधीन कर लिया गया।यद्यपि दक्षिण में सफलता केवल दक्खन के क्षेत्रों तक सीमित थी। विजयों के साथ सुदृढ़ीकरण की नीति का भी प्रारंभ किया गया। सुदृढ़ीकरण की नीति के परिणामस्वरूप विजित क्षेत्रों को एकीकृत प्रशासनिक व्यवस्था के अंतर्गत रखा गया। जिस सुदृढ़ीकृत साम्राज्य का गठन अकबर द्वारा किया गया था उसे सौ वर्षों से भी अधिक उसके उत्तराधिकारी मुगल सम्राटों द्वारा सुरक्षित रखा गया। औरंगजेब के शासन के दौरान दक्खन के बीजापुर, गोलकुण्डा आदि तथा उत्तर-पूर्व के नये क्षेत्रों को मुगल साम्राज्य में शामिल किया गया। साम्राज्य के प्रसार एवं सुदृढ़ीकरण के लिए स्वायत्त सरदारों की सहायता प्राप्त करना मुगल सम्राटों की महत्वपूर्ण सफलता थी।

6.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) बैरम खां के संरक्षण के लिए भाग 6.2 को पढ़कर कृपया अपना उत्तर लिखें।
2) पानीपत की दूसरी लड़ाई में मुगल विजय ने बैरम खां की स्थिति को मजबूत किया। उसके संरक्षण के विषय में भाग 6.2 में पढ़ें।
3) 1557 के बाद बैरम खां ने कुलीन वर्ग के एक बड़े भाग को असंतुष्ट कर दिया था। ये कुलीन गुट आपस में मिल गये और उन्होंने बैरम खां का विरोध शुरू कर दिया। देखें भाग 6.2

बोध प्रश्न 2

1) अकबर ने गुजरात पर अधिकार करने के लिए कई बार प्रयास किये और उसे वह 1580 में अपने अधीन कर सका। पढ़े उपभाग 6.3.2

2) मुख्य तौर पर पूर्वी प्रांत एवं गुजरात प्रभावित थे। देखें उपभाग 6.3.4

बोध प्रश्न 3

1) देखें भाग 6.4

2) औरंगजेब के शासन के दौरान मुख्य क्षेत्रीय प्रसार दक्खन एवं असम में किया गया। देखें भाग 6.5

3) मुगल नीति के अनुसार सरदारों का अपने क्षेत्र पर नियंत्रण करने एवं प्रशासन चलाने का अधिकार बनाए रखा गया। इस नीति के बदले मुगल सम्राटों को आवश्यकता पड़ने पर इन सरदारों का समर्थन एवं सहायता प्राप्त होती रही। विस्तृत जानकारी के लिए देखें भाग 6.6.